श्री राम गोपाल माहेश्वरी

नाम	:	श्री राम गोपाल माहेश्वरी
जन्मतिथि एवं स्थान	:	२० नवम्बर, १९११/ मादोलय जयपुर के पास
शिक्षा	:	नागपुर के मॅारीस कॉलेज से बी. ए., एल.एल.बी.
पताः		'नवभारत' पत्र समूह
(कार्यालय)	:	'नवभारत भवन', काटन मार्केट, नागपुर-४४००१०
दूरभाष	:	५२२९५१, ५२३५६१
<u>पारिवारिक पृष्ठभूमि</u>	:	
पितृ पक्ष	:	केतोव, नागपुर (गोद आये)
<u>ससुराल पक्ष</u>	:	
श्वसुरजी	:	स्व. लाला जी भट्टड़, अमरधा (म० प्र०)
पत्नी	:	स्व. कौशल्या देवी माहेश्वरी
पुत्र	:	श्री प्रकाश चन्द्र, श्री प्रफुल्ल चन्द, श्री विनोद कुमार नवभारत पत्र समूह
पुत्री	:	श्रीमती किरण धूत (औरगांबाद में विडियोकान समूह) श्रीमती निर्मला राठी (श्री लक्ष्मीनारायणजी राठी, पुणे का परिवार) श्रीमती रेखा काबरा, करेली श्रीमती वीणा जाजू, जयपुर (वर्तमान में इन्दौर)

''हजारों साल नर्गिस अपनी बेनुरी पर रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा''

श्री रामगोपालजी माहेश्वरी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। आप समाज के उस गौरवमयी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करतें हैं जिनसे प्रेरणा लेकर और अनुसरण कर पीढ़ियाँ सुधरती हैं और मानव कल्याण की प्रतिमा पर अनवरत रोशनी पड़ती है।

बी. ए., एल.एल. बी. की शैक्षणिक योग्यताएं अर्जित करने के उपरान्त वकालत के कैरियर की अपेक्षा पत्रकारिता के क्षेत्र को चुना। पत्रकारिता के क्षेत्र से १९३३ में पूज्य श्री कृष्णदसाजी जाजू के आवहान पर 'माहेश्वरी' के कार्य से जुड़े, १९३५ में श्री ब्रिजलाल बियाणी के आग्रह पर ३ वर्ष तक 'नव राजस्थान' अकोला के संपादन से और सन् १९३८ में 'नवभारत' का प्रकाशन जो आज नागपुर, रायपुर, इंदौर, जबलपुर, भोपाल, ग्वालियर, बिलासपुर एवं मुम्बई से प्रकाशित हो रहा है, से जुड़े हुए थे। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी दैनिक - म. प्र. क्रानिकल नाम से भोपाल एवं रायपुर से आपके संपादन में प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान में 'नवभारत' निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता हुआ आज सम्पूर्ण मध्य प्रदेश एवं विदर्भ क्षेत्र का सर्वाधिक प्रचारित और प्रसारित समाचार पत्र है। विगत ७० वर्षों के सुदीर्घ काल में पत्र ने अद्वितीय प्रतिष्ठा अर्जित की है।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सभा का पाक्षिक मुखपत्र 'माहेश्वरी' अपने जीवन काल में विभिन्न आँधी तूफानों से सफलता पूर्वक जूझता हुआ, महासभा के विचारों का सजग प्रहरी तथा समाज की आवाज का एक सशक्त मसध्यम है। पत्रकारिता के क्षेत्र में स्वर्ण जयन्ती मनाए हुए आप एक जीवन्त महाविद्यालय हैं जहाँ एक जागरूक विधार्थी अपनी जिज्ञासा की तृप्ति करके उत्तरोतर सफलता की ओर अग्रसर हो सकता है।

श्री माहेश्वरी जी स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे। १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में अंग्रेजी सरकार ने आपके विरूद्ध कार्यवाही की थी।

आपकी कथनी और करनी में समानता थी। सुधारवाद स्वयं से प्रारम्भ होता है,- इस कथनी को आपने अपने जीवन में उतारा। स्वयं का विवाह सुधारवादी पद्धति से किया जिसके विरोध में पिताजी विवाह में सम्मिलित नहीं हुए। 'सादा जीवन उच्च विचार' के पोषक आप खादी पहनते थे।

१९६७ में बीकानेर तथा १९७२ में कलकता अधिवेशन के आप सभापति रहे हैं। आपके कार्यकाल में सामाजिक जागृति

का विगुल बजा। सामाजिक संगठन सुदृढ़ हुए। महासभा की आचार-संहिता के आप सूत्रधार हैं। जाजू ट्रस्ट, आपकी जरूरतमंद विधार्थियों को एक अनुपम भेंट रही हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि आप समाज के गौरवशाली भीष्म पितामह थे।

आप साहित्यिक गतिविधियों में भी अग्रणी थे। विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वर्षों से अध्यक्ष थे। २५ दिसम्बर, १६६८ को आयोजित अधिवेशन में सर्वानुमति से उन्हें एक बार पुनः अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इसके पहले पूर्व व नये मध्य प्रदेश में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री रहे। विभिन्न सम्मान एवं उपाधियों से अलंकृत आप समाज के लिये ऐ प्रेरणा स्रोत थे।

आपकी पत्नी स्व. श्रीमती कौशल्या देवी ने सच्ची सहधर्मिणी के रूप में आपके हर कार्य में सहयोग दिया। आपके तीनों सुपुत्र - श्री प्रकाश चन्द्र जी, श्री प्रफुल्ल कुमार जी एवं श्री विनोद कुमार जी सुचारू रूप से 'नवभारत' पत्र समूह की उत्तरोतर प्रगति हेतु सतत कार्यरत हैं।

श्री राम गोपाल जी माहेश्वरी का व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है। इनकी छत्रछाया में परिवार ने कागज उद्योग एवं प्लान्टेशन लगायें हैं। परिवार औद्योगीकरण की ओर सफलतापूर्वक अग्रसर है।